सही बातें गहराई

आशीषानुकंपा
शताब्दी देशनाचार्य 108 श्री विशुद्धसागर जी मुनिराज

कृतिकार
श्रुतसंवेगी श्रमण आदित्यसागर जी मुनिराज

प्रकाशक

समर्पण समूह
जैनं वचनं सदा वंदे

आशीषानुकंपा

शताब्दी देशनाचार्य 108 श्री विशुद्धसागर जी मुनिराज

कृतिकार

श्रुतसंवेगी श्रमण आदित्यसागर जी मुनिराज

संपादन / सहयोग

श्रुतप्रिय श्रमण अप्रमितसागर जी मुनिराज
सहजानंदी श्रमण सहजसागर जी मुनिराज

कृति का नाम

सही बातें गहराई

संस्करण

2023 : 1008 प्रतियाँ

प्राप्ति स्थान

भोपाल : 91790-50222

जबलपुर : 98276-07171

इन्दौर : 98260-10104

इन्दौर : 94253-16840

भीलवाड़ा : 63766-49881

आकल्पन एवं मुद्रण

डीसेन्ट ग्राफिक्स इंदौर

मो. 98260-14047

शुभाशीष...

वस्तु स्वभाव में परिणामी एवं अपरिणामी है। द्रव्य-दृष्टि से अपरिणामी व पर्याय दृष्टि से परिणामी, पर जो इस सत्य को नहीं जानता वह दूसरे के लिए बोलता है - अमुक व्यक्ति बदल गया, जबकि वह स्वयं भी बदला है। एक-ही समय में परिणाम व अपरिणाम धर्म विद्यमान रहता है, इस **सही बात** को जो जानता है, वह सत्यज्ञाता पर में दोषों का अन्वेषण नहीं करता है, अपितु वस्तु के वस्तुत्व को सम्यक् जानकर मध्यस्थ हो जाता है।

इसी भावना से ओत-प्रोत **तत्त्वान्वेषी श्रुतसंवेगी श्रमण आदित्यसागर जी ने "सही बातें"** नामक कृति का सृजन कर वागीश्वरी के कोष को वर्धमान किया है। वे इसी प्रकार सम्यक् श्रुताभ्यास पूर्वक साहित्य-सृजन कर के संस्कृति का संवर्धन करें, यही शुभाशीष है।

ॐ नमः सिद्धेभ्यः

शताब्दी देशनाचार्य श्री 108 विशुद्धसागर जी मुनिराज

मेरी बात-सही बात

अनेकों चिंतकों ने अपने अभिनव, अभिजात और आत्मोन्मुखी चिंतन से इस भारतीय तत्त्वमनीषा के वाड्मय को सुसंवर्धित किया है। वही चिंतन समीचीन-चिंतन कहलाता है, जो सिद्धांत, तर्क और पूर्वाचार्यों की कथनी से मेल खाता है।

हर व्यक्ति की बातें सही नहीं होती और हर व्यक्ति की बातें गलत भी नहीं होती, कई बार समझने का नज़रिया भी गलत होता है। इस कृति के सृजन का हेतु ऐसे ही कुछ गलत नज़रियों को सही करना है।

विश्ववंद्य प्रभु वर्धमानस्वामी के अहिंसामय सत्यार्थ सिद्धांत जन सामान्य तक पहुँचाने के लिये शब्द और भाषा दोनों ही जनपद संबंधी होना अनिवार्य है। इसी कारण से यह सृजन गुरुप्रसाद, आगमाध्ययन, स्वानुभव और स्वयुक्ति के साथ-साथ सुगम शब्द और भाषा से मैंने अभिसिंचित किया है।

आशा है लघुकृत्य के रूप में प्रस्तुत मेरी कुछ **सही बातें** चिरकाल से प्रचलित गलत बातों को चिरकाल तक सही रखने में सहायक बनेगी।

ॐ नमः सिद्धेभ्यः

श्रुतसंवेगी श्रमण आदित्यसागर जी मुनिराज

सही बातें
गहराई

लोकप्रिय होने के लिये
सबसे ज़्यादा
आप शब्द का प्रयोग करें,
उसके बाद
हम शब्द का प्रयोग करें,
सबसे कम
मैं शब्द का प्रयोग करें...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

अगर आपको
सुखी रहना हो
तो कभी भी किसी से भी
कोई भी इच्छा न करें,
क्योंकि
इच्छा एक ऐसी नागिन है
जो प्रतिपल हमें डसती रहती है;
ध्यान रखें–
वस्तु इच्छा से नहीं
पुण्य और पुरुषार्थ से मिलती है...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

घमण्डी का अभिमान,
दु:खियों का क्लेश,
कुपित का क्रोध,
और
आपस के झगड़े को,
शांत करने का उपाय
मधुर वचन हैं;
देखा भी जाता है
शीतल जल से
दूध की उफान
शीघ्र ही शांत हो जाती है...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

काम–क्रोध
मद–लोभ,
अगर ये अवगुण
किसी विद्वान में भी विद्यमान हों,
तो वह
ज्ञानी होकर भी
मूर्ख के समान ही है,
क्योंकि
आँख होने पर भी
अगर कोई गर्त में गिरता है
तो उसे समझदार
कैसे कहा जाये ?...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

जब समझाने पर भी
व्यक्ति अपनी गलती को
न स्वीकारे,
तब समझाना बंद करके
माध्यस्थ्य हो जाना चाहिये,
क्योंकि
मना करने पर भी
यदि कोई जान करके डूब रहा हो
तो क्या कर सकते हैं...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

जो लोग
कष्ट को सहन करते हैं
उन्हें
बुद्धि और विवेक का
लाभ होता है,
जो लोग
कष्ट में क्रोध करते हैं
उनकी बुद्धि और विवेक का
विनाश होता है...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

आपको
गुणियों का
गुणगान करना चाहिये,
अगर
ऐसा करने में
आप असमर्थ हों,
तो उनके गुणों को
हीन मत कहिये...

✍ श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

हमारी भावना
प्रत्येक समय
प्रशस्त, पुण्यवर्धक और
पापभंजक होना चाहिये,
क्योंकि
भावना ही साधन है
प्रसिद्धि और सिद्धि में...

✍ श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

अपनी
गलतियों को सुधारें,
परंतु
उनके होने पर
दुःखी न होंवे,
क्योंकि
गलतियाँ सभी से हो सकती हैं;
ठीक ही है
अच्छे-अच्छे खिलाड़ी भी
कभी-कभी हारते हुये
देखे जाते हैं...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

आपके
सही काम करने पर भी
अगर कोई आपको
टोकता है, रोकता है,
तो ऐसे लोगों की बातें सुनकर
रोइये मत
उदास भी मत होइये,
अपितु
उनकी बातें
वहीं भूल जाइये;
क्योंकि
आपके सही काम में
सबसे बड़ी बाधा
उनकी बातें ही हैं...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

विचारों और शब्दों को
सही-गलत राह दिखाने वाली
भावनायें हुआ करती हैं,
यहाँ तक कि
जीवन की दिशा भी
बहुत हद तक
भावनाओं पर ही निर्भर करती है,
इसीलिये
सर्वांगीण सुधार के लिये
भावनाओं को सुधारिये ...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

विचार और शब्द
वाहन की तरह होते हैं
जो भावनाओं के
ईंधन के बिना
किसी काम के नहीं होते हैं,
भावनायें ही
आपके विचार और शब्दों में
शक्ति भरती हैं...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

किसी भी पद को
प्राप्त करना सरल है,
परंतु
उस पद के अनुरूप
चलना, ढलना और आचरण करना
बहुत कठिन है,
इसीलिये
पद को प्राप्त करने के पहले
उसके अनुरूप चलना सीखिये,
वरना
पद चला जायेगा...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

अगर आपके अपने
आपसे रूठ जायें
तो आप मत रूठिये
न ही उनसे दूर हटिये,
आप तो उन्हें मनाइये
उनके पास बसिये,
क्योंकि
दूरियों से
दूरियाँ बढ़ती हैं
और
नज़दीकियों से
नज़दीकियाँ ...

✍श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

चिड़चिड़े स्वभाव के
लोगों की संगति
चिड़चिड़े लोगों से हो जाती है
और
खुशनुमा लोगों की
खुशनुमा लोगों से;
ठीक ही है
सर्पों को
सर्पों की संगत लुभाती है
और
हिरणों को
हिरणों की...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

खुद को व्यस्त
और
भावों को प्रशस्त रखने का
सबसे सुंदर उपाय है
लिखना और पढ़ना,
लेकिन
जो अच्छा होने के साथ-साथ
सच्चा भी हो उसे ही पढ़ें
और ...
उसे ही लिखें

✍श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

प्रोत्साहित करने वालों से
जुड़े रहें,
ऐसे लोग
आपकी जीत को
एक नई दिशा देते हैं,
निराश और हताश लोगों से
दूर रहें,
ऐसे लोग
आपको कभी जीत की ओर
बढ़ने नहीं देंगे...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

कई बार
स्वार्थी लोगों के लिये
आप अपनी
ज़िंदगी निकाल देते हैं,
और
समय पड़ने पर
वो आपको अपनी
ज़िंदगी से निकाल देते हैं,
इसीलिये
अपनी ज़िंदगी में
स्वार्थी लोगों को
स्थान नहीं देना ही
बुद्धिमत्ता है ...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

आप
शेर से भी
लड़ सकते हैं,
समुद्र को भी
पार कर सकते हैं,
यहाँ तक कि
हर मुश्किल काम को भी
सरल कर सकते हैं,
बस आपके पास होना चाहिये
आत्मविश्वास...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

आपके
सोये हुये जज़्बे को
आपकी ही आत्म-प्रेरणा
जगा सकती है,
आत्म-प्रेरणा से
अपने जज़्बे को जगाइये
और शीघ्र ही
सफल हो जाइये ...

✍श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

ईश्वर
न हमारा अच्छा करते हैं
न ही बुरा,
हमारा अच्छा–बुरा
हम स्वयं ही करते हैं,
इसीलिये
बुरा होने पर
ईश्वर को दोष न देकर
अपनी ही करतूती को
दोष देना चाहिये...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

बुरी आदतों से
हमारे छोटेपन का भान होता है
और
अच्छी आदतों से
सज्जनता का,
इसीलिये
अच्छी आदतों को डालिये
और
उन्हीं में ढलिये

...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

पाप की क्रियाओं में
पश्चात्ताप होता है,
परंतु
आनंद की क्रियाओं में
पश्चाताप नहीं
खुशी होती है,
अब आप स्वयं सोचिये
क्या करना है...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

अगर आप संतोषी हैं
तो ही आप
आनंद का जीवन जी सकते हैं,
क्योंकि
संतोष ही
आनंद का मूल हेतु है...

✍श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

खुशहाल जीवन
बाहर की दशा नहीं है,
वह तो
अंदर का आनंद है,
परंतु
हम उसे बाहर ढूँढ़ते हैं,
इसीलिये
खुशहाल नहीं रह पाते हैं...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

आनंद
चाहने से नहीं बढ़ता
आनंद तो
बाँटने से बढ़ता है,
चाहने से तो
संकल्प-विकल्प बढ़ता है...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

शांति
जोड़ने में नहीं
छोड़ने में मिलती है,
मेरी तो
यही सलाह है कि
छोड़ना सीखिये
और
जोड़ना छोड़िये ...

✍ श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

मुस्कुराहट
एक इत्र के समान है,
उसे आप
जितना छिड़केंगे,
उतनी अधिक
खुशबू महकेगी...

✍श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

कुछ लोग
अपने गुस्से का दुर्गुण नहीं
शक्ति मानते हैं,
शायद वह इसलिये
क्योंकि उनके पास
सद्गुणों का अभाव है;
सच है-
नीम की कड़वाहट
तभी तक आपको अच्छी लगती है,
जब तक आपने
आम का स्वाद नहीं चखा हो...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

कसरत
और
विपरीतता में
बहुत समानतायें हैं,
दोनों से
इंसान का शरीर टूटता है,
पर
जो सह लेते हैं
उन्हें बहुत कुछ मिलता है...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

उन्हीं चीज़ों का
उपयोग करें
जो आपके लिये जरूरी हों,
क्योंकि
अनुपयोगी चीज़ें
आपका उपयोग
आपके लक्ष्य से हटा देते हैं...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

जब भी
जीभ में घाव होता है
वह सबसे पहले भरता है,
परन्तु
जब भी
जीभ से घाव होता है
वह मरते दम तक नहीं भरता है...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

अगर आप
किसी को उपहार में
अच्छा वक्त देते हैं,
तो मेरी समझ से
आपने उसे
सर्वश्रेष्ठ उपहार दिया है...

✍ श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

ज़िन्दगी को कोई
भरोसा नहीं है,
जिससे भी मिलना
मुस्कुराकर मिलना,
न जाने कल
मुस्कुराने के लिये
ज़िन्दगी मिले न मिले...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

जैसे
आपको खुशी प्यारी है,
वैसे ही
दूसरों को भी प्यारी है,
इसलिये
अपनी खुशी के साथ-साथ
दूसरों की खुशी का भी ध्यान रखें...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

सही समय पर
सही बात बोलें
अथवा
जो भी बोलें
मतलब का बोलें,
अगर आप
ऐसा न कर सकें
तो मौन लेना ही श्रेष्ठ है...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

मुस्कुराते लोगों की संगत
बहुत लाज़वाब होती है,
भले ही
वो कुछ न दें,
पर
आपका दिल
खुशियों से जरूर भर देते हैं...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

समझदार लोग
नाम की आकांक्षा छोड़कर
अच्छे-अच्छे काम करते हैं,
क्योंकि
नाम आकांक्षा से नहीं
अच्छे कामों से ही होता है...

✍श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

अगर आपको
किसी कार्य में
सफलता देर से मिले,
तो घबराना नहीं
बड़ी इमारतें
देर से ही बनती हैं...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

लाखों का दान
और
करना दूसरों का कल्याण,
लेकिन
है अगर मान
तो जहन्नुम में जान...

✍श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

आपकी ज़िंदगी में
बहुत लोगों का आना
कोई खास बात नहीं है,
उनमें से
कितने लोग आपको
याद रखते हैं
यह खास बात है...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

आँखें
एक साथ रहती हैं
मगर जब कभी बंद होती हैं
एक साथ बंद होती हैं,
दोस्त
आँखों की तरह ही
होना चाहिये ...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

अच्छी बातों को
बड़े ही इत्मिनान से
लिखा जाता है,
आप भी
बड़े इत्मिनान से ही
उन्हें पढ़ें,
तभी जीवन में
सफलता आ पायेगी...

✍ श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

सपने साकार करने के लिये
कल का इंतज़ार मत करना,
क्या पता
सपने साकार करने के लिये
कल मिले या न मिले...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

पैन से एक शिक्षा
हर किसी को लेना चाहिये,
पैन
कितना ही अच्छा चले
पर चलता
सिर झुकाकर ही है...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

किसी को जीतने के लिये
ताकत नहीं
मुस्कुराहट जरूरी है,
ताकत की जरूरत तो
हराने के लिये पड़ती है...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

किसी की भावनाओं के साथ
कभी मत खेलना,
क्योंकि
भावनाओं के साथ खेलने पर
हार तो हमेशा
रिश्तों की ही होती है...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

अपनी गलतियों को
स्वीकारने का मतलब है,
आप अपने
आत्मभवन में
झाड़ू लगाना सीख गये हैं...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

आत्मध्यान ही
सच्चा–दर्पण है,
क्योंकि
इसमें सिर्फ
आपकी ही छवि दिखती है
दूसरों की नहीं...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

खराब वक्त में भी
हौसलों को बुलंद रखें,
अगर
हौसले बुलंद हैं
तो समय कैसा भी हो
उसे झुकना ही पड़ेगा ...

✍ श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

पैसा और इज़्जत
दोनों एक साथ कमाना
हर किसी के बस की बात नहीं है,
अकसर लोग
पैसा कमाने के चक्कर में
इज़्जत गवाँ देते हैं...

✍श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

बुरे वक्त से
कभी नहीं डरना,
क्योंकि
वक्त बुरा हो या अच्छा
सदा एकसा नहीं रहता...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

सफलता
मिठाई की तरह है,
जिसे पाना
तो हर कोई चाहता है,
पर
उसके लिये मेहनत करना
कोई नहीं चाहता है...

✍श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

धीरता और दृढ़ता के साथ
अनुशासनता
अगर नहीं है
तो लक्ष्य की प्राप्ति की भी नहीं
संभवता...

✍श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

आपके जीवन में
जितनी बाधायें बढ़ें
उतना ही
उत्साह को भी बढ़ायें,
ध्यान रखें-
बाधाओं के आने पर
अगर उत्साह मंद पड़ गया,
तो बाधायें
आप पर हावी हो जायेंगी ...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

सम्मान में
जो मुस्कुरा लें
वो सम्मान के योग्य नहीं है,
जो अपमान में भी मुस्कुरा ले
सच में
वही सम्मान के योग्य है...

✍श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

दुर्जन के पास
कितनी ही विभूतियाँ
क्यों न हों,
पर
उससे दूरियाँ ही अच्छी हैं,
क्योंकि
साँप के पास
मणि होने पर भी,
मैंने किसी को
उससे दोस्ती करते नहीं देखा...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

भरपूर मेहनत करने पर
यदि सफलता प्राप्त न हो
तो दु:खी न होना
न ही रोना,
रोना–दु:खी होना
सफलता का मंत्र नहीं है,
गिरकर पुन: दौड़ना ही
सफलता का मंत्र है ...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

जीवन में
खुश रहना हो
तो जो आपको अच्छा लगे
उसे प्राप्त करना सीख लें,
अथवा
जो प्राप्त हो चुका है
उसे अच्छा मानना सीख लें...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

मूर्ख लोगों से
दूर रहना चाहिये
और
उनसे अपनी रक्षा
अवश्य करना चाहिये,
क्योंकि
मूर्ख लोग न तो
अपनी रक्षा कर पाते हैं,
न ही वे
किसी की सेवा कर पाते हैं...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

गलतियों को
गलतियाँ न मानना ही
जीवन की सबसे बड़ी
गलती है...

✍श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

समझदार बनने के लिये
नया कुछ नहीं करना पड़ता है
बस
अपने ही अंदर की
नासमझ को मिटाना पड़ता है...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

संबंध और व्यापार
बराबरी वालों से होता है,
पर दोस्ती
दोस्ती बराबरी वालों से नहीं होती
दोस्ती में
सब बराबर होते हैं...

✍श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

अगर आप
सुख के दिन बढ़ाना चाहते हैं,
तो संयमित हो जाइये,
क्योंकि
बिना संयमित जीवन के
सुख का जीवन असंभव है...

✍श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

बीते हुये
दिन के लिये रोना
और
आने वाले कल के लिये सोचना,
यानि
आज के आनंद को
बुद्धिपूर्वक खोना...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

मन को जीतना
सबसे कठिन काम है,
लेकिन
जिसने इसे जीत लिया
समझ लीजिये
उसने स्वयं के साथ-साथ
दुनिया भी जीत ली है...

✍श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

बोलने के साथ-साथ
सुनना भी सीखिये,
दूसरों को सुनेंगे
तो ही आप
कुछ नया दे पायेंगे,
अगर
सिर्फ बोलते रहेंगे
तो कुछ नया नहीं सुना पायेंगे...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

लक्ष्य के किनारे तक
पहुँचना हो जिन्हें
उन्हें
धैर्य और मेहनत को
अपनी दो भुजायें बनाना चाहिये
और
तब तक तैरना चाहिये
जब तक
जीत का किनारा न मिल जाये...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

झूठ कभी
अकेला नहीं होता
उसके सहारे के लिये
हज़ारों झूठ साथ में होते हैं,
पर
सत्य हमेशा
अकेला होता है,
क्योंकि
उसे किसी की जरूरत नहीं होती...

✍ श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

आप
उसे ही चुनें
जो आपके योग्य हो
और
सर्वश्रेष्ठ हो,
क्योंकि
अयोग्य के चयन से
आप भी
अयोग्य हो सकते हैं...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

गलतियों को क्षमा करना
अच्छी बात है,
पर
गलतियों को भूल जाना
और भी अच्छी बात है...

✍ श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

किसी भी
सीधे व्यक्ति को
अच्छे व्यक्ति को
हद से ज़्यादा
परेशान नहीं करना चाहिये,
क्योंकि
कहा है कि-
सुंदर काँच टूटने पर
धारदार हथियार बन जाता है...

✍श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

ज्ञान और धन
दोनों के अर्जन के लिये
उत्साह आवश्यक है,
क्योंकि
उत्साह के बिना
कोई बड़ा कार्य
पूर्ण नहीं होता...

✍श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

अपनी सोच से आप
अपने भविष्य का अनुमान
लगा सकते हैं,
सोचिये-
आधे भरे हुये गिलास को
आप आधा खाली देखते हैं
या आधा भरा ...

✍ श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

रिश्तों में दरार आ जाये
तो दरार मिटायें
रिश्ते नहीं,
नाखून बढ़ जाने पर
नाखून काटे जाते हैं
अंगुलियाँ नहीं...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

अच्छे-बुरे वक्त को
सदा याद रखें,
बुरे वक्त में
अच्छे वक्त की यादें
सुकून देती हैं,
अच्छे वक्त में
बुरे वक्त की यादें
चौकन्ना रखती हैं...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

माँ और पिता
दोनों जरूरी हैं ज़िन्दगी के लिये,
माँ जीते जी
अपने किरदार की
अहमियत समझा देती है,
पिता की अहमियत
जाने के बाद समझ में आती है...

✍श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

लेने वालों के हाथ
नीचे होते हैं,
देने वालों के हाथ
ऊँचे होते हैं;
इसलिये
लेने से हम छोटे हो जाते हैं
देने से हम बड़े हो जाते हैं...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

आपकी सफलता
आपके मित्रों को बताती है
कि आप कौन है?
आपकी असफलता
आपको बताती है
कि आपके मित्र कौन है?...

✍ श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

जीवन में
कोई बड़ा मिल जाये
तो छोटों को छोड़ मत देना,
सुई का काम
सुई करती है
तलवार नहीं...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

एक काम के लिये
अनेकों कारण चाहिये पड़ते हैं,
कुछ काम
सहज हो जाते हैं
कुछ के लिये
घोर पुरुषार्थ करते पड़ते हैं...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

अगर लोग आपको
जरूरतों में ही याद करते हों,
तो भी बुरा मत मानना
उनकी सहायता ही करना
और
अपने आप में गर्व करना,
दीपक की याद
तभी आती है
जब अंधकार होता है...

✍श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

संगति हमेशा
सोच विचारकर
और
अच्छे लोगों से ही करें,
हवा
जब फूलों से गुज़रती है
तो खुशबूदार हो जाती है,
जब मल से गुज़रती है
तो बदबूदार हो जाती है...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

दुनिया में
सिर्फ मेहनत की कद्र नहीं होती
साथ में
भाग्य भी चाहिये,
अगर
सिर्फ मेहनत की कद्र होती
तो गधा
सबसे ज़्यादा इज़्जतदार होता...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

आप जो चाहें
वो करने में सक्षम हैं,
अनंत शक्तियाँ
आपके अंदर हैं,
कभी हार मत मानिये
एक दिन जीत जरूर होगी...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

जीत के लिये
जी तोड़ मेहनत कीजिये,
अवसरों के आधीन
मत बैठिये,
मेहनत आपके हाथों में है
अवसर तो कभी-कभी आते हैं...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

जन्म से ही व्यक्ति
महान पैदा नहीं होता,
वह जन्म लेकर
कुछ अच्छा करने से
महान होता है...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

स्वयं को
खुश रखने के लिये
अपने लिये भी
कुछ किया करें,
कहीं ऐसा न हो जाये कि
दूसरों का पेट भरते-भरते
आप ही भूखे मर जायें...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

उलझनें
सभी की ज़िंदगी में आती हैं,
मगर
उनसे निकलना
बहुत ही कम लोग को आता है...

✍श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

अर्जुन जैसी हुनर
बातें करने से नहीं
मेहनत करने से आती है,
बातें करने से
कुछ आता नहीं,
अपितु
गंभीरता और चली जाती है...

✍ श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

किसी भी चीज़ को
छोड़ना कठिन नहीं है,
कठिन है
उसे छोड़ने के बाद
उससे छूटना...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर